टिप्पणी

31

परियोजना लेखन

आपने अखबार या पुस्तक पढ़ते हुए या राह चलते कहीं किसी साइनबोर्ड पर परियोजना शब्द लिखा हुआ ज़रूर देखा और पढ़ा होगा। समाचारों में भी अक्सर पढ़ने-सुनने को मिलता है कि अमुक कार्य के लिए सरकार ने अमुक परियोजना चलाई है, या प्रधानमंत्री या अमुक मंत्री ने अमुक परियोजना का उद्‌घाटन किया। आजकल विद्यालयों में भी विद्यार्थियों को परियोजना तैयार करने के लिए कहा जाता है। क्या कभी आपने सोचा है कि परियोजना कहते किसे हैं? परियोजना का अर्थ क्या है? आइए इस पाठ में हम परियोजना के बारे में विस्तार से जानते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- परियोजना शब्द का अर्थ बता सकेंगे;
- परियोजना का महत्त्व समझा सकेंगे;
- परियोजना के विविध प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- परियोजना तैयार करना सीख सकेंगे।

क्रियाकलाप

आप सड़कों के किनारे लगे साइनबोर्डों पर लिखे या समाचारों में पढ़-सुन कर कुछ परियोजनाओं के बारे में अवश्य जानते होंगे। उदाहरण के लिए स्वर्ण चतुर्भुज परियोजना। इसी तरह अन्य किन्हीं चार परियोजनाओं के नाम याद कीजिए या उनके बारे में पता कर यहाँ लिखिए।

1.	3. ....
2.	4. ....

31.1 परियोजना का अर्थ

अब आपके मन में परियोजना शब्द के बारे में कुछ-कुछ बातें स्पष्ट हो गई होंगी। क्या आप बता सकते हैं कि परियोजना कहते किसे हैं? नहीं? चलिए हम आपको बताते हैं–

'परियोजना' शब्द 'योजना' में 'परि' उपसर्ग लगने से बना है। 'परि' यहाँ पर 'पूर्णता' के अर्थ में लगा है। यानी एक ऐसी योजना, जो अपने आप में पूर्ण हो। परियोजना का शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी विचार को व्यवस्थित रूप में स्थिर करना या प्रस्तुत करना। इसके लिए अंग्रेजी में शब्द है– प्रोजेक्ट। प्रोजेक्ट का एक अर्थ होता है, प्रकाशित करना। यानी इसके शाब्दिक अर्थों का सहारा लेते हुए कहें तो ***परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती है।***

हमें आए दिन किसी-न-किसी समस्या का सामना करना पड़ता है और हम उससे निपटने के लिए कोई-न-कोई तरीका सोचते रहते हैं। जैसे–यातायात की समस्या, पीने के पानी की समस्या, बिजली की समस्या आदि। इसी तरह हमारे आसपास बहुत-सी ऐसी समस्याएँ मौजूद हैं, जिन्हें देख या सुनकर हम सोचने पर मजबूर हो उठते हैं और उनके समाधान के लिए कुछ-न-कुछ उपाय सोचने लगते हैं, जैसे–गंदगी की समस्या, आत्महत्या की घटना, नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली बीमारियों की समस्या, आदि।

इस प्रकार जब हमारे सामने कोई समस्या आती है तो सबसे पहले हम उस समस्या की तह तक जाकर उसके सभी पहलुओं को जानने की कोशिश करते हैं। समस्या का कारण क्या है, समस्या कितनी गहरी है, इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है या पड़ेगा, कितने लोग उससे प्रभावित हैं या होंगे आदि। फिर हम उस समस्या के निदान या समाधान के बारे में सोचते हैं। उसके निदान की सभी संभावनाओं और उपायों का विचार करते हैं। इस तरह हमारे मन में तैयार यह पूरी विचार योजना एक प्रकार की परियोजना होती है।

लेकिन विद्यालयों में या कक्षा में जो परियोजना तैयार करने को दी जाती है या कही जाती है वह सरकार द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं से भिन्न होती है। इस तरह की परियोजनाओं का उद्देश्य आपके पाठ्यक्रम के बोध को और गहरा या पैना करना होता है। इसलिए इन परियोजनाओं के विषय प्रायः आपके पाठ्यक्रम के विषयों पर आधारित होते हैं। मान लीजिए आपके पाठ्यक्रम में पर्यावरण पर एक पाठ है। आप पर्यावरण के बारे में काफ़ी कुछ पढ़ चुके हैं लेकिन उसके विभिन्न कारणों और दुष्प्रभावों के बारे में आपको अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। इसी को ध्यान में रखकर आपसे कहा जाता है कि पीने के पानी की समस्या पर एक परियोजना तैयार कीजिए। तो इसके लिए आप जो परियोजना तैयार करेंगे वह सरकारी या किसी संगठन द्वारा तैयार परियोजना से थोड़ी भिन्न होगी।

31.2 परियोजना का महत्त्व

परियोजना-निर्माण शिक्षा का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी

खेल की तरह का ही आनंद भी मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है– खेल-खेल में बहुत कुछ सीखना। जैसे ऊपर कही गई पीने के पानी की समस्या पर परियोजना तैयार करने का ही उदाहरण लें। यदि आपको कहा जाए कि इस पर निबंध लिखिए तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अलग-अलग शहरों में और गाँवों में पीने के पानी की समस्या से संबंधित अखबारों में छपे समाचारों को काट कर अपनी कॉपी में चिपकाइए तो शायद आपको बहुत मज़ा आएगा। इस तरह से समाचार इकट्ठे करके चिपकाना भी एक शैक्षिक परियोजना है। इस तरह से न सिर्फ़ आपने समाचार काटे और चिपकाए, बल्कि कई शहरों में और गाँवों में पीने के पानी की समस्या, उसके कारणों और कुछ हद तक उसके समाधान के तरीकों से भी परिचित हो गए।

परियोजना द्वारा पाठ्य सामग्री से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह आपमें तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आपमें नए-नए तथ्यों के प्रति जिज्ञासा और उन पर अपने विचार प्रकट करने के कौशल का विकास होता है। इससे आपमें एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों की जानकारी प्राप्त होती है। आपमें चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की क्षमता का विकास होता है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि परियोजना का महत्त्व निम्नलिखित है–

- आप अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर नए विषयों के ज्ञान की ओर उन्मुख होते हैं।
- आपके अंदर नए-नए विषयों के प्रति चिंतन करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।
- खेल-खेल में बहुत-सी नई बातें सीखते हैं।
- नए-नए तथ्यों के संग्रह करने का अभ्यास होता है।
- पाठ्य सामग्री के अलावा अन्य पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित होती है।
- लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का अभ्यास तथा प्रयोग करना सीखते हैं।
- आपका अर्जित भाषा-ज्ञान समृद्ध तथा व्यावहारिक रूप ग्रहण करता है।
- आप योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन के लिए प्रेरित होते हैं।
- आपके पाठ्य सामग्री से संबंधित बोध में विस्तार होता है।
- आप में किसी समस्या के मूल कारण तक पहुँचने की प्रवृत्ति का विकास होता है।
- खोजी प्रवृत्ति का विकास होता है तथा सामग्री जुटाने, उसे व्यवस्थित करने तथा उसे विश्लेषित करने की क्षमता का विकास होता है।
- किसी समस्या के निदान के लिए संभावित समाधान खोज निकालने की क्षमता का विकास होता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 31.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. परियोजना में निम्नलिखित में से किसे प्रकाशित किया जाता है–

   (क) मन के भावों को (ग) घटना की भाषा को

   (ख) तथ्य आधारित विचारों को (घ) समस्या के तथ्यों को

2. परियोजना का विषय मुख्यत: किस पर आधारित होता है–

   (क) केवल पर्यावरण पर (ग) किसी भी समस्या पर

   (ख) सरकारी विभागों की समस्या पर (घ) पानी की समस्या पर

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–

   (क) परियोजना पाठ्य-सामग्री के अलावा भी बहुत-सी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा देती है।

   (ख) परियोजना तैयार करते समय नए-नए तथ्यों को संग्रह करने की आदत विकसित होती है।

   (ग) परियोजना से पाठ्य-सामग्री से प्राप्त बोध का विकास होता है।

   (घ) परियोजना का संबंध पाठ्य-सामग्री से नहीं होता।

31.3 परियोजना का स्वरूप

परियोजना तैयार करने के कई तरीके हो सकते हैं। हर व्यक्ति की परियोजना तैयार करने की शैली अलग हो सकती है, जैसे–निबंध, कहानी, कविता लिखने या चित्र बनाते समय होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं–एक तो वे, जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं।

समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्राय: सरकारी अथवा दूसरे संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती है।

किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे शैक्षिक परियोजना भी कहा जा सकता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नई-नई बातों से अपने आप

परिचित भी होते चले जाते हैं। शैक्षिक परियोजना को भी आगे दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पाठ आधारित शैक्षिक परियोजना तथा
2. शुद्ध ज्ञान के विषयों पर आधारित परियोजना

1. पाठ आधारित शैक्षिक परियोजना

पाठों पर आधारित परियोजनाओं को ठीक से समझने के लिए आइए एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए आपकी पाठ्यपुस्तक में 'वह तोड़ती पत्थर' (निराला) पाठ पर आधारित परियोजना बनानी है तो उसके लिए उसी से मिलती-जुलती अन्य पाँच कवियों की कविताएँ संकलित कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिख सकते हैं और उनकी तुलना करते हुए अपने विचार भी लिख सकते हैं। या सड़कों, नए बनते भवनों के लिए काम करती महिलाओं के चित्र इकट्ठे करके उन्हें चिपका सकते हैं और यदि उनके बारे में कहीं कोई जानकारी उपलब्ध है तो वह भी लिख सकते हैं। इसी प्रकार रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता पर आधारित परियोजना तैयार कर सकते हैं। 'आखिरी चट्टान' यात्रा-वृत्तांत पढ़ने के बाद अन्य पर्यटन स्थलों के बारे में बहुत-सी नई जानकारियाँ आपको प्राप्त हुई होंगी। इनमें से बहुत-सी बातें आप पहले से भी जानते होंगे या इनके अलावा भी बहुत-सी बातें आपको मालूम होंगी। आपके मन में बहुत से नए विचार भी आए होंगे। फिर इन्हीं सब बातों को जुटाइए, पर्यटन स्थलों के महत्त्व पर सामग्री जुटाइए, कुछ प्रसिद्ध स्थलों के चित्र जुटाइए और उन्हें क्रम से लिखते और लगाते चले जाइए। पाठ पर आधारित परियोजना तैयार। यह तो हुआ पाठ पर आधारित परियोजना का स्वरूप।

2. शुद्ध ज्ञान के विषयों पर आधारित परियोजना

आप जान चुके हैं, पाठ आधारित परियोजना के अलावा कुछ परियोजनाएँ शुद्ध ज्ञान पर आधारित हो सकती है। इस तरह की परियोजनाओं का संबंध सीधे-सीधे पाठ से तो नहीं होता, किंतु इन्हें तैयार करने से आपको पाठ से संबंधित अनेक जानकारियाँ अपने आप मिलती चली जाती हैं। जो बातें आपको पाठ पढ़ते समय समझ में नहीं आ पातीं वही बातें परियोजना तैयार करते समय स्वयं आसानी से आ जाती हैं। इन परियोजनाओं का उद्देश्य एक प्रकार से आप द्वारा पढ़े हुए पाठ से प्राप्त जानकारियों के प्रति जागरूक बनाना और आपके अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करना होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए आपसे 'साक्षरता के महत्त्व' पर एक परियोजना तैयार करने को कहा जाता है तो एक बार को आपको लग सकता है कि इस विषय का हमारी पाठ्य पुस्तक से भला क्या संबंध है। लेकिन जब आप अपने आस-पास नज़र डालते हैं। लोगों में अशिक्षा के बारे में अखबारों अथवा पत्रिकाओं से आँकड़े इकट्ठे करते हैं, चित्र जुटाते हैं, फिर इससे पैदा होने वाली परेशानियों के बारे में पता लगाते हैं तो आपको समझ में आता है कि अरे, यह परियोजना तो हमारी पाठ्य सामग्री के 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' पाठ को समझने में बहुत मददगार

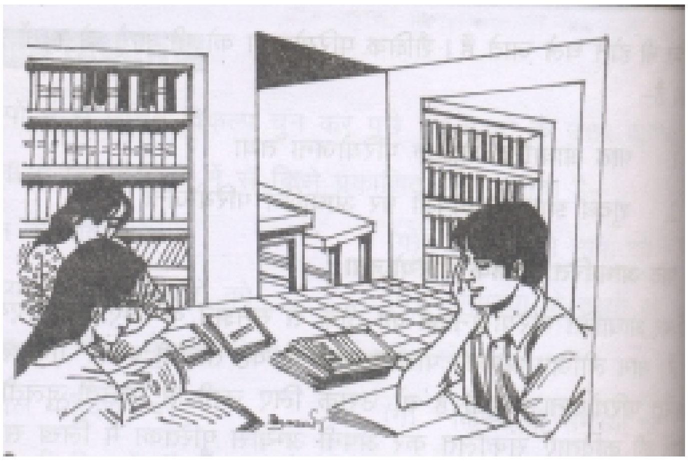

चित्र 31.1 पुस्तकालय की सहायता से परियोजना लेखन की तैयारी

साबित हुई। इस प्रकार शुद्ध ज्ञान की परियोजनाएँ कहीं-न-कहीं आपके पढ़े हुए पाठों को समझने अथवा पाठ्य पुस्तक से प्राप्त जानकारी को और बढ़ाने तथा आपके अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने में मदद करती हैं।

इस प्रकार आपने शायद यह बात महसूस कर ली होगी कि परियोजना भी एक प्रकार का क्रियाकलाप ही होती है। लेकिन पाठों में दिए गए क्रियाकलापों से इसका क्षेत्र थोड़ा व्यापक होता है।

पाठगत प्रश्न 31.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. परियोजना तैयार करने के तरीके–

   (क) सभी के एक होते हैं (ग) कुछ के एक से हो सकते हैं

   (ख) भिन्न हो सकते हैं (घ) मिले-जुले होते हैं

2. परियोजना पाठ्य-सामग्री को ठीक से समझने में–

   (क) मदद नहीं करती (ग) मददगार होती है

   (ख) बाधा उत्पन्न करती है (घ) उलझन पैदा करती है

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–

   (क) परियोजना का विषय पाठों पर आधारित भी हो सकता है।

   (ख) परियोजना के विषय में कोई-न-कोई समस्या अवश्य होती है।

   (ग) परियोजना का विषय शुद्ध ज्ञान के लिए भी दिया जा सकता है।

   (घ) परियोजना केवल समस्याओं के समाधान के लिए तैयार की जाती है।

31.4 परियोजना तैयार कैसे करें

ऊपर कही गई बातों के आधार पर आपने कुछ-न-कुछ तो अंदाज़ा लगा ही लिया होगा कि परियोजना कैसे तैयार की जाए। परियोजना तैयार करते समय आप 'अच्छा कैसे लिखें' पाठ में बताई गई सभी युक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं। परियोजना लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है:

- परियोजना के लिए दिए गए विषय को पूरी तरह समझें।
- दिए गए विषय से संबंधित आँकड़े जुटाएँ।
- अखबारों में छपे विषय संबंधी समाचार एकत्रित करें।
- समस्या से संबंधित चित्र प्राप्त करें।
- यदि ग्राफिक और रेखाचित्र पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में आसानी से उपलब्ध हैं तो उन्हें भी इकट्ठा करें।
- परियोजना तैयार करने से पहले उसकी एक अच्छी-सी भूमिका लिखें और फिर उसी के आधार पर परियोजना तैयार करें।
- आँकड़ों के आधार पर समस्या के विभिन्न पहलुओं का एक-एक कर, अलग-अलग उदाहरणों के रूप में शीर्षक के साथ विश्लेषण करें।
- हर पहलू का सटीक वर्णन करें।
- जो भी आँकड़े, चित्र, रेखाचित्र, ग्राफिक, विज्ञापन आदि प्रमाणस्वरूप दें, उनके स्रोत यानी उसे आपने कहाँ से प्राप्त किया उसके बारे में अवश्य उल्लेख करें। (उदाहरण के लिए समाचार पत्र-पत्रिका का नाम, अंक, दिनांक आदि)।
- विश्लेषण तथ्यों पर आधारित सटीक होना चाहिए। विश्लेषण करते समय भावना में न बहें।
- किसी से सुनी हुई बात को प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत न करें। सही स्रोत से उसकी पुष्टि करने के बाद ही उसका उल्लेख करें। हाँ, देश के किसी ज़िम्मेदार पद पर बैठे किसी नेता, जैसे– मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि के कथनों अथवा भाषणों का उल्लेख कर सकते हैं।

हम जान चुके हैं कि परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की तैयार की जा सकती है, एक तो किसी समस्या के निदान के लिए और दूसरी किसी दिए हुए विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए। आइए दोनों तरह की परियोजनाएँ बनाना सीखते हैं।

चित्र 31.2 संदर्भ पुस्तकें पढ़ें

समस्या प्रधान परियोजना

अब आइए उक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए उदाहरणस्वरूप 'देश में पेय जल-समस्या' विषय पर एक परियोजना लिखना सीखते हैं। इस विषय पर लिखने के लिए पहले तो आप इस समस्या को पूरी तरह समझें कि यह समस्या किस रूप में है। यह समस्या कई कारणों से हमारे देश में उत्पन्न हुई है। इनमें से बरसात कम होने के कारण नदियों का जल स्तर कम होना, जमीन के भीतर जलस्तर का काफी नीचे चले जाना, कुएँ-तालाब आदि जैसे प्राकृतिक जल स्रोतों का सूख जाना, प्रदूषण के कारण पानी का पीने लायक न होना, जनसंख्या वृद्धि, पानी का अनावश्यक खर्च आदि।

अब इस समस्या के इन सभी पहलुओं पर अलग-अलग आँकड़े एकत्र करें। ये आँकड़े आपको समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सरकार द्वारा जारी जल संरक्षण संबंधी पोस्टरों, दस्तावेज़ों आदि से प्राप्त हो सकते हैं। आप सरकार या किसी अन्य संस्था द्वारा जारी उन पोस्टरों, चित्रों, ग्राफिक आदि को भी प्रमाणस्वरूप परियोजना के साथ लगा सकते हैं। फिर इस बात की जानकारी प्राप्त करें कि देश के किन-किन राज्यों में पेय जल की सबसे अधिक समस्या है। इससे संबंधित आँकड़े और चित्र भी एकत्र करें। आप अक्सर समाचारों में पढ़ते होंगे कि राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों में पेय जल की समस्या भयानक रूप में है। अब आप यह खोजने का प्रयास करें कि इन राज्यों में रोज प्रति व्यक्ति कितने पानी की आवश्यकता है और वहाँ कितना पानी उपलब्ध हो पा रहा है। जैसे एक मोटे अनुमान के मुताबिक रोज एक आदमी को पीने के लिए सात लीटर पानी की आवश्यकता होती है। लेकिन देखा यह गया है कि कई-कई दिनों तक नलों में या तो पानी आता ही नहीं या आता भी है तो इतना कम आता है कि लोग कतार लगाए खड़े रहते हैं और सबको पानी नहीं मिल पाता। गरमी के मौसम में अखबारों में अक्सर पानी के लिए लंबी कतार में खड़े लोगों या दूर से पानी लेकर आती महिलाओं के चित्र छपते रहते हैं। ये चित्र आपकी परियोजना के लिए प्रमाण का काम करेंगे। इसी प्रकार पेय जल की समस्या के निदान के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रयासों का पता लगाइए और जानने की कोशिश कीजिए कि सरकार इन प्रयासों में कहाँ तक सफल रही है और नहीं रही है तो क्यों नहीं रही है। उन योजनाओं में क्या कोई कमी रही है?

अब इन सभी बातों पर विचार करते हुए सोचिए कि पेय जल से निपटने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं? जैसे बरसात के पानी को जगह-जगह एकत्र कर प्राकृतिक जल स्रोतों का विकास करना, घर में पानी के अनावश्यक खर्च पर रोक, नदी जल को प्रदूषित होने से रोकना आदि। फिर इन्हीं बातों को क्रमवार प्रमाण के साथ लिखते चले जाइए। और फिर अंत में अपने सुझाव लिखिए।

शुद्ध ज्ञान वर्द्धन वाले विषय पर परियोजना

आप 'अनुराधा' कहानी का पाठ पढ़ चुके हैं। सोचिए तो, क्या उस विषय पर कोई परियोजना बन सकती है। जी हाँ बन सकती है। उस पाठ का स्वरूप काफ़ी हद तक परियोजना की शर्तों को पूरा करता है। आपको इसी तरह के अनंत विषय मिल सकते

हैं, जैसे—मान लीजिए आप को भारत में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति पर परियोजना तैयार करने को कहा जाता है। आप गाँव में रहते हैं। आप अपने गाँव या आसपास के गाँव की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन कीजिए और देखिए कि वहाँ महिलाओं की क्या स्थिति है? वहाँ की महिलाओं का रहन-सहन कैसा है? क्या उनमें आपको कोई ऐसी महिला मिली, जिसने समाज के विकास में योगदान दिया हो या देने की क्षमता रखती हो। उस महिला से बातचीत कीजिए। साथ ही अन्य महिलाओं से भी बात कीजिए और जानने का प्रयास कीजिए कि समाज-निर्माण के बारे में वे क्या करना चाहती हैं। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के बारे में उनकी क्या राय है? इसी प्रकार आप अपने गाँव में बोली जाने वाली लोकोक्तियों का संग्रह कर सकते हैं। गाँव में पानी की समस्या पर परियोजना तैयार कर सकते हैं। पुस्तक में आए कठिन शब्दों को चुनकर उन्हें क्रम में लगाकर एक शब्द-कोश बना सकते हैं या किसी पत्रिका को देखकर अपनी एक लघु पत्रिका का प्रारूप तैयार कर सकते हैं आदि। विषय अनंत हो सकते हैं। बस ज़रूरत है आपको अपने दैनिक जीवन की घटनाओं के प्रति सजग रहने और उन पर चिंतन करने की।

इसी प्रकार आप पेड़ का उदाहरण लेते हुए संज्ञा पर परियोजना तैयार कर सकते हैं, जैसे पेड़ अपने आप में एक संज्ञा है लेकिन उसमें जड़, पत्तियाँ, कोपल, तना, टहनी आदि कई संज्ञाएँ छिपी हैं। उसे आप रेखाचित्र के माध्यम से भी तैयार कर सकते हैं।

इस तरह की परियोजनाएँ किसी विषय के बारे में समुचित और रोचक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार की जाती हैं। इस तरह की परियोजना आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। ऐसी परियोजनाएँ समस्या प्रधान परियोजनाओं से भिन्न होती हैं क्यों कि इनमें आपको अपने सुझाव देने की गुंजाइश नहीं होती या बहुत कम होती है। बाकी इसे तैयार करते समय भी उक्त बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

31.5 नमूने की परियोजना

ऊपर हम पीने के पानी की समस्या पर बात कर आए हैं, आइए इसी विषय पर एक नमूने की परियोजना तैयार करना सीखते हैं।

पानी की समस्या

भूमिका

पीने के पानी की समस्या दिन पर दिन भयावह रूप लेती जा रही है। इसका मुख्य कारण पारंपरिक जल स्रोतों का लगातार सूखते जाना, ज़मीन के अंदर के जल स्तर का नीचे जाना और जल स्रोतों का प्रदूषित होना है। यही कारण है कि जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है लोगों को पीने के पानी की कमी होती जा रही है और यह समस्या सिर्फ़ शहरों में नहीं बल्कि गाँवों में भी अपने पाँव पसार रही है। लोगों को मीलों दूर से पानी लाना पड़ता है। सरकार लोगों को पानी पहुँचाने, पानी के

पारंपरिक स्रोतों– जैसे नदी, तालाब, कुएँ, बावड़ियाँ आदि के संरक्षण आदि की पूरी कोशिश कर रही है, उस पर भी पीने के पानी को लेकर आपसी झगड़े की घटनाएँ अक्सर सामने आती रहती हैं।

पानी की कमी का कारण

कहते हैं जल ही जीवन है। पीने के पानी की खपत से कहीं ज़्यादा दूसरे कार्यों के लिए पानी की ज़रूरत होती है। पानी न सिर्फ़ पीने के लिए बल्कि अच्छी फ़सल के लिए खेतों की सिंचाई, रोजमर्रा के उपयोग के लिए और पशुओं आदि के लिए भी ज़रूरी है।

लेकिन आज स्थिति यह है कि पीने का पानी भी लोगों को मुश्किल से मिल पाता है। हमारे देश में पानी की समस्या 1980 के दशक में पहली बार भयानक रूप लेती दिखाई दी। सरकार ने शहरों के अलावा गाँवों में भी घरों तक पानी की पाईप लाइनें बिछाने के काम में तेज़ी दिखाई। फिर भी आज राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली आदि शहरों में करोड़ों लोगों को ज़रूरत भर का पानी भी नहीं मिल पाता। पानी की कमी के मुख्य रूप से निम्नलिखित कारण हैं:

1. बढ़ती जनसंख्या
2. जल प्रदूषण
3. पारंपरिक जल स्रोतों का गलत प्रयोग
4. उपलब्ध जल की बर्बादी

1. बढ़ती जनसंख्या

आजादी के बाद हमारे देश की जनसंख्या इतनी तेज़ी से बढ़ी है कि आज यह एक अरब के आँकड़े को भी पार कर गई है। जाहिर है जब जनसंख्या बढ़ती है तो उसके अनुसार संसाधनों का विकास भी ज़रूरी होता है, जैसे भोजन के लिए अन्न, पीने के लिए पानी, पहनने के लिए वस्त्र, रहने के लिए घर आदि। इनमें से खेती को बढ़ावा देकर या दूसरे देशों से आयात कर खाद्यान्न की समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है, कपड़ा मिलें लगा कर वस्त्र संबंधी समस्या को दूर किया जा सकता है। बहुमंजिली इमारतों का निर्माण कर रहने की समस्या को भी काफ़ी हद तक दूर किया जा सकता है लेकिन पीने के पानी के लिए तो हमें अपने प्राकृतिक जल स्रोतों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन शुरू हो गया, जिससे प्रदूषण और जल स्रोतों के सूखते चले जाने के कारण पानी की समस्या दिन-पर-दिन बढ़ती चली गई।

2. जल प्रदूषण

बढ़ती जनसंख्या के कारण पानी की खपत तो बढ़ी ही है, प्राकृतिक प्रदूषण में भी तेजी से वृद्धि हुई है। घरों से निकलने वाला कचरा, जल-मल या तो नदियों में बहा दिया

जाता है या ज़मीन के नीचे दबा दिया जाता है। हालाँकि अब तो सरकार ने नदियों में कचरा बहाए जाने पर कानूनी रोक लगा दी है, लेकिन शहरों में घरों से निकलने वाला कचरा अभी भी काफ़ी मात्रा में नदियों में बहाया जाता है, जिससे उनमें गाद भर जाती है और पानी काफ़ी समय तक नहीं ठहर पाता और बहकर समुद्र में चला जाता है। यही कारण है कि जहाँ नदियों में पानी साल भर भरा रहता था वे अब गरमी का मौसम शुरू होने से पहले ही सूखी रहने लगी हैं। यही नहीं आमतौर पर इन्हीं नदियों का पानी साफ कर पाईपलाइनों के जरिए घरों तक पहुँचाया जाता है। घरेलू गंदगियों के इनमें मिल जाने के कारण वह पानी हानिकारक होता चला जाता है और नदियों में पानी की कमी के कारण जल की उपलब्धता प्रभावित होती है। दूसरी ओर जमीन के नीचे कचरा दबाए जाने के कारण ज़मीन के नीचे का पानी प्रदूषित हो जाता है। जिसे जब हम हैंड पाईपों के जरिए पीने के लिए पानी खींचते हैं तो उससे कई बीमारियाँ पैदा होने का खतरा बना रहता है।

चित्र 31.3 जल प्रदूषण

3. पारंपरिक जल स्रोतों का गलत प्रयोग

नदियाँ और ज़मीन के भीतर का जमा जल ही मुख्य रूप से हमारे पारंपरिक जल स्रोत हैं। लेकिन बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण वैश्विक तापमान बढ़ने सेऽपहाड़ों पर जमी रहने वाली बर्फ अब जल्दी पिघलने लगी है, जिससे नदियों में भरपूर पानी नहीं आ पाता। बरसात की कमी या वर्षा जल का सही संरक्षण न हो पाने के कारण ज़मीन एक ओर उचित मात्रा में पानी को सोख नहीं पाती जिससे ज़मीन के भीतर का जल स्रोत कम होता जा रहा है और दूसरी ओर हैंडपाईपों और ट्यूबवेलों के माध्यम से धरती और नदी के जल का अधिक दोहन होने लगा है। इस कारण प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि हर साल ज़मीन के नीचे जितना जल संचय हो पाता है उसका लगभग तीन गुना पानी खींच लिया जाता है। इस तरह सदियों से संचित जल का स्तर भी काफ़ी नीचे चला गया है। इस चिंता से सरकार अब वर्षा जल के संग्रहण के लिए लोगों को प्रोत्साहित कर रही है, जिसे अब 'जल-खेती' के नाम से जाना जाता है।

4. उपलब्ध जल की बर्बादी

इन सबके अलावा जहाँ पानी उपलब्ध है, लोगों में पानी के प्रयोग की सही जानकारी न होने के कारण, उसका दुरुपयोग भी जल की उपलब्धता में कमी का एक मुख्य कारण है। लंबी पाइपलाइनों के जगह-जगह फटे होने के कारण करोड़ों लीटर पानी

रोज बर्बाद हो जाता है। जो पानी घरों तक पहुँचता है उसका भी लोग सही प्रयोग नहीं करते। रसोई में, बाथरूम में, स्नान के लिए, पौधों की सिंचाई, कार की धुलाई, घर की धुलाई, कपड़ों की धुलाई आदि में हर घर में सैकड़ों लीटर पानी व्यर्थ बहा दिया जाता है, जबकि पानी के इस्तेमाल के सही तरीके अपना कर इस बर्बादी को काफ़ी हद तक रोका जा सकता है और जल संरक्षण कर पानी की समस्या पर रोक लगाई जा सकती है।

समस्या का निदान

पानी की दिनोंदिन बढ़ती समस्या पर पानी के सही प्रयोग पारंपरिक जल स्रोतों के दोहन, जल प्रदूषण आदि पर रोक लगा कर काबू पाया जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कि हम स्वयं तो पानी की समस्या के प्रति जागरूक हों ही अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक बनाएँ।

उक्त परियोजना सीमित शब्दों में आपके लिए दी गई है। आप अन्य सामग्री जुटाकर अनेक प्रकार से इसे विस्तार भी दे सकते हैं। समाचार पत्र अथवा पत्रिकाओं से अनेक प्रकार के चित्र काट कर लगा सकते हैं। कुछ आँकड़े जुटा कर तालिका, चार्ट, प्रवाह चाट्र आदि बनाकर सुंदर प्रस्तुती कर सकते हैं। आपकी कल्पना, आपकी सर्जनात्मकता के लिए सारे रास्ते खुले हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप उनका किस प्रकार सदुपयोग करते हैं।

पाठगत प्रश्न 31.3

उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. समस्या प्रधान परियोजना में प्रमुख रूप से किन-किन विषयों को समाहित किया जाता है?

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

   (घ) ....

2. शुद्ध ज्ञान की परियोजना के विषय मुख्यतः किन बातों पर आधारित होते हैं?

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

   (घ) ....

31.6 आपने क्या सीखा

- परियोजना किसी समस्या के निदान अथवा किसी विषय की समुचित जानकारी देने के उद्देश्य से तैयार की जाती है।
- परियोजना तथ्यों पर आधारित होती है। इसमें भावनाओं की कोई गुंजाइश नहीं होती।
- परियोजना तैयार करने से पहले विषय की पूरी जानकारी, उससे संबंधित तथ्यों, चित्रों, आँकड़ों, ग्राफिक, विज्ञापन आदि का संग्रह करना आवश्यक होता है।
- परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की तैयार की जाती है– एक कार्य परियोजना और दूसरी शैक्षिक परियोजना।
- समस्या मूलक परियोजना में आप सलाह दे सकते हैं, जबकि किसी विषय की जानकारी देने वाली परियोजना में अपने सुझाव देना आवश्यक नहीं होता। शैक्षिक परियोजनाएँ खेल-खेल में बहुत-सी नई-नई बातें सीखने का अवसर प्रदान करती है।

31.7 पाठांत प्रश्न

1. परियोजना किसे कहते हैं?
2. परियोजना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए?
3. परियोजना का क्या महत्त्व है? अपने शब्दों में बताइए।
4. परियोजना तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है?
5. समस्या प्रधान विषय और शुद्ध ज्ञानवर्द्धन वाले विषयों पर तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में क्या अंतर होता है? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।
6. 'देश में आतंकवाद की समस्या और निदान' विषय पर एक परियोजना तैयार कीजिए।
7. पाठ्य-सामग्री में समाहित विभिन्न कवियों के बारे में सामान्य परिचय, चित्र, रचनाएँ आदि एकत्रित कर एक सुंदर परियोजना प्रस्तुत कीजिए।
8. 'बालिका पढ़े, परिवार पढ़ें तो पूरा देश पढ़े' विषय पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

31.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)
31.2 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)
31.3 स्वयं कीजिए